Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

भारत में नारी मुक्ति संघर्ष का संक्षिप्त इतिहास

Dr. Kamal*

Assistant Professor, Chotu Ram Arya College, Sonipat

***सार –** भारतीय प्राचीनतम संस्कृति में नारी को अत्यन्त सम्मानित स्थान प्राप्त है। भारत का नारी मुक्ति संघर्ष, पश्चिम के नारी संघर्ष से भिन्न है। पश्चिमी देशों में 'प्रबोधन काल' के सामाजिक वातावरण ने स्त्रियों के बीच नई चेतना का संचार कर दिया था तथा लोकक्रान्तियों के अन्तर्गत स्त्री समुदाय ने भी अपने सामाजिक राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष आरम्भ कर दिया था। भारत सहित अन्य औपनिवेशिक संरचना वाले समाजों में नारी मुक्ति की घटना कुछ अन्य प्रकार से घटित हुई। 19वीं शती के उत्तरार्द्ध में जो राष्ट्रीय जनवादी, लोकजागरण हुआ, उसी की एक अभिव्यक्ति और प्रतिफलन के रूप में, पितृसत्ता, निरंकुश मध्ययुगीन सामन्ती उत्पीडन के विरूद्ध नई स्त्री मुक्ति चेतना का संचार हुआ। 19वीं शती के उत्तरार्द्ध में उच्च मध्यवर्गीय शिक्षित वर्ग की स्त्रियों में और 20वीं शती के आरम्भ में विशेष रूप में से स्वदेशी आन्दोलन के दौरान आम मध्यवर्ग की स्त्रियों में भी एक नई राष्ट्र मुक्ति की चेतना के साथ-साथ अपने सामाजिक अधिकारों की भावना पनपने लगी। 19वीं शती के अन्तिम दो दशकों मे स्त्रियों के नेतृत्व में स्त्री अधिकार, आन्दोलन, सामाजिक आन्दोलनों का रूप लेने लगे। पण्डिता बाई आदि ने विभिन्न स्त्री कल्याणकारी संस्थाओं की स्थापना की।*

---------------------------------x---------------------------------

इसके अतिरिक्त 20वीं सदी के पहले दशक में, स्वदेशी आन्दोलन तथा कांग्रेस के गर्म दल के नेताओं का आम जनता में जो प्रभाव था उससे स्त्री समुदाय भी अछुता न था। इसी सदी के दूसरे और तीसरे दशक में स्त्रियों की सामाजिक जागृति के क्षेत्र में आने वाली विशेष परिघटना 'गांधी जी' द्वारा प्रतिपादित स्त्री मुक्ति की की सैद्धान्तिक अवधारणा थी। उन्होनें राष्ट्रीय आन्दोलन में स्त्रियों की व्यापक भागीदारी का व्यवहारिक प्रयोग किया। वे राजनीतिक, सामाजिक जीवन में और राष्ट्रीय आन्दोलनों में स्त्री की भागीदारी में पक्षधर थे उन्नीसवीं सदी के अभिजन समुदायों के द्वारा चलाए गए समाज सुधारों के दायरे से बाहर, गाँधी जी पहली बार आधुनिक भारत में आम भारतीय नारी को चुल्हे-चैखट, पर्दे की सलंध्य सीमा से बाहर खींच लाने और उसे उसकी सामाजिक-वैयक्तिक अस्मिता का बोध कराने में सफल रहे।

इस प्रकार 20वी सदी के दौरान स्त्रियों के नेतृत्व में भी स्त्री आन्दोलनों की लहर उठने लगी। राष्ट्रीय आन्दोलनों के अतिरिक्त उस समय की सामाजिक स्थिति, स्त्री शिक्षा और अंग्रेजी संस्कृति का प्रभाव आदि ने स्त्री लहरों और आन्दोलनों से भिन्न थी। उस समय की उग्र परिवर्तनवादी धारा की लेखिकाओं में 'उमा नेहरू' का नाम सर्वोपरि है। जिसने अपने समय की स्त्रियों के साथ मिलकर अपने लेखन में पुरूषों की स्वार्थपरता, समाज में उनके विशेषाधिकार, स्त्रियों के प्रति तिरस्कारपूर्ण स्थिति, यौन उत्पीडनवादी प्रवृतियों की कटु आलोचना की।

हिन्दी भाषी क्षेत्र में स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए आवाज उठाने वाली पहली पत्रिका 'बाला बोधिनी' थी, जिसें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 1874 ई॰ में प्रकाशित किया था। इसके बाद के समय में स्त्रीमुक्ति आन्दोलन में संवेगपूर्ण और रचनात्मक कार्य करने में नेहरू परिवार की चार स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान है, ये है- रामेश्वरी नेहरू, ऊमा नेहरू, कमला नेहरू, रूपकुमारी नेहरू। 1909 में 'रामेश्वरी नेहरू' ने 'प्रयाग महिला समिति' का गठन किया तथा अपने सम्पादन में 'स्त्री दर्पण' नामक गम्भीर पत्रिका का सम्पादन आरम्भ किया। अपने समय की सबसे उग्र और भारत की सम्भवतः पहली नारीवादी विचारक-लेखिका ऊमा नेहरू के अतिरिक्त हृदय मोहिनी हुक्मा दवी, सत्यवती और सौभाग्यवती आदि प्रमुख लेखिकाएँ थी। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के संस्थापक सत्यभक्त और प्रसिद्ध साम्यवादी लेखक 'राधामोहन गोकुल जी' तथा रमाशंकर अवस्थी 'स्त्री दपर्ण' के नियमित लेखक थे। इसलिए उनके साम्यवादी विचारों का प्रभाव भी उस पत्रिका के द्वारा सम्प्रेषित हो रहा था। इसके अतिरिक्त 'गृहलक्ष्मी' 'आर्य महिला' और 'महिला सर्वस्व' महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ थी जो स्त्रियों

www.ignited.in

की आजादी और अधिकारों के पक्ष में, पश्चिम की बजाए प्रायः भारतीय अतीत में तर्क और साक्ष्य जुटाती थी।

इस प्रकार दूसरे और तीसरे दशक में हिन्दी भाषी क्षेत्र में नारी जागरण का जो उभार दिखाई देता है, उसमें कई धाराएँ सक्रिय थी जिन्हें दो धड़ों में बाँटा जा सकता है। एक ओर आर्य समाज के सामाजिक आन्दोलन और गाँधी जी के राजनीतिक आन्दोलन एवं उनके विचारों से प्रभावित सुधारवादी धाराएँ थी तथा दूसरी ओर मध्यवर्गीय उग्र परिवर्तनवादी धाराएँ थी। तीसरी धारा 19वीं शताब्दी के अन्त में यूरोप में चल रहे नारीवादी आन्दोलनों (विशेष रूप से मताधिकार और अन्य सामाजिक अधिकारों के लिए संघर्षरत) रूसी क्रान्ति, तुर्की क्रान्ति और समाजवादी विचारों से प्रभावित थी (जो 1920-30 में भारत में प्रभाव और विस्तार प्राप्त कर रहे थे)। ये विविध किस्म की उग्र परिवर्तनवादी धाराएँ थी आज भी लेखन में इन तीनों विचारधाराओं से प्रभावित स्त्रियाँ किसी न किसी रूप से सक्रिय है।

उत्तर आधुनिकता का नारी संदर्भ और भारत में नारी मुक्ति संदर्भ के अन्तर्गत हमने नारी के अपनी स्थिति को सुधारने के प्रयासों के संक्षिप्त इतिहास की चर्चा की है, जो विभिन्न धाराओं और पहलूओं को अपने में समेटे आज भी संघर्षरत है नारी के इस संघर्ष के परिणामस्वरूप उनकी स्थिति में परिवर्तन भी हुआ है। आज ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है, जहाँ नारी ने अपनी योग्यता को प्रमाणित नही किया है। मेरे इस सारे विवेचन का यहाँ उद्देश्य यह है कि इस दायरे में शोध किया जा सके कि उत्तर आधुनिक स्थिति और नारी संघर्ष की हिन्दी कहानी पर क्या प्रभाव पड़ा है। हमारे बौद्धिक साहित्यिक वर्ग की नारी के बारे में क्या सोच बनी है तथा इस संदर्भ में उनका विश्लेषण और निरीक्षण क्या है। इसके साथ-साथ हिन्दी कहानी में किस रूप में प्रतिबिम्बित हुई है। इस तथ्य का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए मैने पुरूष और स्त्री लेखकों की रचनाओ का अलग-अलग विवेचन किया है, ताकि इस विषय का समूचित अध्ययन किया जा सके। क्योंकि नारीवाद यह अनुभव करता है कि नारी पुरूष की समानता का पक्षधर पुरूष भी नारी के विषय में सब कुछ नहीं जान सकता। वह नारी त्रासदी का द्रष्टा हो सकता है या फिर सहानुभूतिकर्ता परन्तु भोक्ता नहीं। इसलिए पुरूष लेखक की अनुभुतियाँ और संवेदनाएँ स्त्री लेखक की अपेक्षा अलग होगी। इसलिए दोनों की रचनाओं के बारे में अलग-अलग बात करके हम जहाँ नारीवाद की उपरलिखित अवधारणा के औचित्य को जान पाएँगे वहीं नारी विषय का समुचित अध्ययन भी हो जाएगा। वैसे भी किसी विषय का समुचित बोध उसकी आत्मगत अनुभूति और दूसरों की निष्पक्ष प्रस्तुति के समुच्चय से ही बनता है। आज तक किसी भी विषय के मूल्यांकन में नारी पक्ष की अवहेलना होती रही है। इसलिए उसकी अपनी स्थिति और विश्लेषण रूप में उसकी आवाज को सुनना उचित और न्यायपूर्ण है।

1991 के बाद लिखी गई कहानी में बहुत से लेखकों के द्वारा अनेक कहानियाँ लिखी हुई मिल जाती हैं। जिससे पता चलता है कि स्त्रियों के बारे में इनकी धारणाएँ भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं और उन्होंने स्त्री के भिन्न रूपों का वर्णन किया है, नारी का परम्परागत रूप, विद्रोह करती नारी का रूप, पहले की अपेक्षा बिल्कुल परिवर्तित नारी का वर्णन आदि शामिल हैं। नारी रचित हिन्दी कहानी में इन सभी नारी रूपों का वर्णन तो है ही, इसके अतिरिक्त नारी ने अपने यौन शोषण और सामान्यतः पुरूष की नारी के प्रति मानसिकता का वर्णन भी किया है। लेकिन आज के ज्वलन्त और जीवन्त विषय जैसे कन्या भ्रूण हत्या, बलात्कार आदि दोनों ही कहानियों में न के बराबर हैं।

पुरूष लेखकों ने हिन्दी कहानी में नारी की स्थिति तथा समाज की उसके प्रति मानसिकता का वर्णन सहानुभूतिपूर्वक किया है। कई लेखकों के यहाँ नारी के प्रति संवेदना इतनी प्रगाढ है कि नारीवाद की आत्म अनुभूति का दावा झूठा सा प्रतीत होता है। उनकी कहानियों में स्त्रियों पर बचपन से ही थोपा गया अनुशासन, मर्यादा और संयम का भी वर्णन है और इन मर्यादाओं को तोड़ने पर मिलने वाली सजा की व्याख्या है और इस सब के कारण स्त्रियों के मन में समाए हुए डर को भी पुरूष लेखकों ने पूरी ईमानदारी से प्रकट किया है। इनकी कहानियों से साफ-साफ प्रकट होता है कि जैसे आर्थिक कारणों से घर से बाहर निकलने और काम करने की ढील मिली है परन्तु स्वतन्त्रता नहीं। उसे हमारे समाज ने अभी वह आजादी नहीं दी है कि वह निर्णय कर सके कि उसे कैसे जीवन बसर करना है, कहाँ जाना है, क्या करना है, क्या पहनना है, क्या खाना है? ऐसी सामाजिक स्थिति में निर्मित स्त्री अगर अपनी शादी के तीस साल बाद भी अपने पति से पूछे कि सड़क पार कर लूँ तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसके अतिरिक्त इन परिस्थितियों में भी अगर कोई औरत समाज के मर्यादित पथ से हटकर कोई फैसला लेने का साहस कर ही ले अर्थात् अपनी मर्जी से किसी से प्रेम कर बैठे तो घर की इज्जत भंग करने के आरोप में लड़कियों को जान से मार देना भी हमारे समाज के लिए कोई अनहोनी घटना नहीं है। अगर ऐसा नहीं भी होता है तो उसकी समाज में क्या दुर्गति होती है, इसका उदाहरण ‘संजय कुन्दन’ द्वारा रचित ‘चिड़ियाघर’ कहानी है जिसमें लेखक समाज के पुरूष की नारी के प्रति मानसिकता को दर्शाता है। कहानी के एक पात्र शालिग्राम शुक्ल का मानना है कि स्त्री जब तक छुप-छुप के किसी पुरूष के साथ अपनी मर्जी से सम्बन्ध बनाती है और जब वह समाज के सामने उजागर हो जाती है तो वह चिल्लाने लगती है और बलात्कार के आरोप

www.ignited.in

लगाती है। उनका मानना था कि छेड़छाड़ और बलात्कार के लिए औरत ही जिम्मेदार होती है। एक दिन उन्होंने कहा, "मेहमान, इ बलात्कार-उलात्कार कुछ नहीं है। अरे सब कुछ मरजी से होता है। मान लीजिए कि चल रहा घटर-पटर बहुत दिन से, घरा गये-देख लीहिस कोई इसलिए और चिल्ला मारती है कि बलात्कार हो रहा है, इ हो रहा है उ हो रहा है..."

नारी के प्रति समाज की मानसिकता को दर्शाते हुए लेखक 'संजय कुन्दन' ने अपनी कहानी 'झील वाला कंप्यूटर' में दर्शाया है कि किस तरह छोटे शहर वाली लड़की के बारे में अपने विचार देते है जब सजल ने बताया कि वह नीना से प्रेम करता है और उससे शादी करना चाहता है। उसके माँ-बाप इस शादी के खिलाफ है। वह दिल्ली नौकरी के लिए आया है तो सन्तोष उसे कहता है कि "वह छोटे शहर की लडकी यहाँ की लाइफ में एडजस्ट नहीं कर पाएगी। तुम्हें एक बेटर लाइफ पार्टनर की जरूरत है जो कमाऊ हो जिसके कारण तुम्हारा एक स्टेटस बने।"

आधुनिक युग को विज्ञान का युग तथा उत्तर आधुनिक युग को सूचना एवं प्रसारण तथा तकनीक का युग माना जाता है और वैश्वीकरण के कारण विश्व के एक भाग में होने वाले विकास के कारण जन-जन की मानसिकता और पूर्वाग्रहों पर चोट मानी जाती है, परन्तु वास्तविकता क्या है इसकी झलक साहित्य हमें समय-समय पर दिखाता रहता है। आज का लेखक भी कहीं पर विधवाओं की दुर्गति देखता है और उसे अपनी कहानियों में वर्णित करता है। वह समाज का एक पहलू है जिससे स्पष्ट होता है कि कस्बों, शहरों से दूर कुछ राज्यों के अंदरूनी गाँवों में लोगों की स्त्री के प्रति मानसिकता अभी पूरी तरह से बदली नहीं है। वे आज भी धार्मिक आस्थाओं मे विश्वास करते है आज भी हमारे समाज में धार्मिक आस्थाओं पर नारी का विश्वास बरकरार है। धार्मिक आस्थाओं का सहारा लेकर आज भी नारियों को भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है। आज भी हमारे समाज में धार्मिक आस्थाएं फैली हुई है। 'संजय कुन्दर' द्वारा रचित कहानी 'चिड़ियाघर' में दर्शाया है कि आज की महिला भी धार्मिक आस्थाओं मन्दिरों में विश्वास करती है और वे कुछ भी नया या अच्छा हो जाने में भगवान का हाथ मानती है और प्रसाद का भोग लगाती है। कौशल्या भी रविशंकर की टेबुल बदल जाने पर खुशी जताते हुए अगती जागर की बात करती है और कहती है कौशल्या ने फिर कहा - "हम तो मन्नत माँगे थे कि जब आपका टेबुल बदल जाएगा तो हम भगवती जागरण करेगे।"

इसी प्रकार धार्मिक आस्थाओं का जुड़ाव 'सावंत आंटी की लडकियां' कहानी में दर्शाया है। लेखक कहता है कि किस प्रकार बेटियों के विवाह कर दे और अपने आपको बैकुंठ में पाएं-"एक पुण्यात्मा की तरह उनके हाथ पीले करे और बैकुंठ के दरवाजे पर दस्तक दें।"

स्त्री के प्रति समाज की तिरस्कृत मानसिकता के अतिरिक्त हिन्दी कहानी ने नारी की परम्परागत छवि का चित्रण किया है जिसे पढ़कर ऐसा अहसास होता है जैसे भारतीय नारी विश्व के उत्तर आधुनिक परिवेश से बिल्कुल अछूती है। उसकी स्थिति बिल्कुल उसी प्रकार चिंताजनक बनी हुई है जैसी शताब्दियों पूर्व थी। उसका आर्थिक और शारीरिक शोषण हो रहा है। वह गृहस्थी के कार्यो में उलझी हुई है। कार्य के बोझ से वह इतना थक गई है लेकिन नारी बदलते समाज के परिवेश के साथ-साथ उपनी परम्पराओं का निर्वहण करती तथा उनके साथ संघर्ष करती चल रही है। नारी अपने परिवार की मान मर्यादा का पूरा ख्याल रखती है। 'शहतूत' नामक कहानी में जब लेखक कहता है कि ओमप्रकाश और मैं जब आपस में एक दूसरे की बहन के साथ शादी करने की बात करते है तो उसकी दादी उसे समझाती है और अपनी परम्पराओं का निर्वहण करवाती है। कहती है कि "मान लो ऐसा हो जाए तो बामन की लड़की पाकर उसकी तो इज्जत बढ़ जाएगी पर तुम्हारे तो पूरे खानदान की नाक कट जाती है।"

स्त्री की विद्रोही छवि का वर्णन हिन्दी कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से दर्शाया है। समाज के अनचाही तथा परम्पराओं का विद्रोह करती स्त्री का वर्णन लेखक ने अपनी कहानियों में दर्शाया है स्त्री को अपने हक के लिए विद्रोह करते हुए दर्शाया है। 'एक कप काँफी' कहानी में नबीला जो पढ़ना चाहती है लेकिन उसे बार-बार अपने परिवार के द्वारा रोके जाने पर वह उसका विद्रोह करती है "क्यो छोड दूँ, वही एक रास्ता है जो मुझे अपने मन की जिन्दगी दे सकता है। रोज दस-दस घण्टे पढ़ाई कर रही हूँ घर के काम अलग।"

कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से दर्शाया है कि किस प्रकार स्त्री अपने शरीर की रक्षा करती है और अपने उपर हो रहे अत्याचारों का विरोध करती है इसका उदाहरण इस प्रकार है 'रात बाकी' कहानी में रणधीर जब अपने दोस्तों के साथ सोमारी पर जोर जबरदस्ती करने की कोशिश करता है तो वह उसका पूरजोर विरोध करती है और उनको पीट-पीट कर भगा देती है "वैसा-वैसा कट्टा-रिवाल्वर सोमारी रोज देखती थी काहे को डरती। टाँगों में हाथ डालकर पटक दिया, सहेलियों ने बगल के गाछों से मोटी-मोटी टहनियाँ तोड़ी और चमचों के सिर पर बरसाना चालू।"

अब तक औरत की जिस स्थिति का विवेचन हुआ है, उससे बिल्कुल भिन्न प्रकार का दृष्टिकोण और सर्वेक्षण इस प्रकार है

www.ignited.in

कि आज की नारी पौराणिक परम्पराओं को छोड़कर आज पुरूष की बराबरी करने लगी है आज नारी की स्थिति बदलती जा रही है 'झील वाला कंप्यूटर' कहानी में लेखक दर्शाता है कि आज की नारी, पुरूषों के समान कार्य करती है तथा उनमें भाग लेती है आज की लडकियाँ ऑफिस का काम ही नहीं फील्ड का काम भी बराबर करती है- "पन्द्रह लोगो में दस लडकियाँ थी। पुरूषों के जिम्मे विज्ञाप्ति बनाने, अनुवाद करने, लेख लिखने और विचार करने का काम था। तीन लडकियों के पास डिजाइनिंग-टाइपिंग आदि के काम थे। बाकी सात लडकियाँ फील्ड में रहती थी। वे सब बीस से पच्चीस की उम्र की, पब्लिक स्कूलों में पढी, सम्पन्न परिवार की लडकियाँ थी।"

लेखक दर्शाता है कि आज की लड़कियाँ लड़को के बराबर काम करती हैं जो उनकी बदलती छवि को दर्शाता है। लेखक ने नारी की छवि को दर्शाया है कि आज की नारी फील्ड का काम करती है, अखबारों, दफ्तरों के काम करती है तथा राजनीति में भी सक्रिय है "फील्ड में काम करने वाली कुछ लडकियाँ अखबारों के दफ्तर के चक्कर लगाती, कुछ प्राइवेट कम्पनियों के पब्लिसिटी मैनेजरों को दुआ-सलाम करने जाती तो कुछ राजनेताओं से गप्प लडाती। उनकी तनख्वाह शेष लोगों से लगभग तिगुनी थी।"

संदर्भ सूची

1. संजय कुन्दन, बाँस की पार्टी, पृ॰ 67
2. वही, पृ॰ 96
3. संजय कुन्दन, बाँस की पार्टी, पृ॰ 69
4. गीत चतुर्वेदी, सावंत आंटी की लडकियां, पृ॰ 28
5. मनोज कुमार पाण्डेय, शहतूत, पृ॰ 67
6. मनोज कुमार पाण्डेय, शहतूत, पृ॰ 104
7. रणेन्द्र, रात बाकी एवं अन्य कहानियां, पृ॰ 11
8. संजय कुन्दन, बाँस की पार्टी, पृ॰ 94
9. वही, पृ॰ 94

Corresponding Author

Dr. Kamal*

Assistant Professor, Chotu Ram Arya College, Sonipat